ऋग्वेद से ऋचाएँ

उनकी प्रकाशमान किरणें अब उन देव से परिचय कराती हैं
जो उन समस्त सजीवों को जानते हैं
जो सूर्य के दर्शन कर सकते हैं।

प्रकाश [ज्योति] के रचयिता,
हे सूर्यदेव, आप वेगवान व सुन्दर हैं
जो पूरे दीप्तिमान आकाश को आलोकित करते हैं।

अन्धकार के परे देखते हुए
हम परम प्रकाश [परम ज्योति] तक पहुँचते हैं
और देवाधिदेव सूर्यदेव को प्राप्त करते हैं जोकि प्रकाश हैं।

वेद, प्राचीन भारत की आदि शास्त्रीय रचनाएँ हैं जिन्हें अपौरुषेय [दैवीय रूप से प्रकट], शाश्वत ज्ञान माना जाता है। पौराणिकता की दृष्टि से चारों वेदों का क्रम इस प्रकार है — ऋग्वेद [प्रार्थना-मन्त्रों का ज्ञान], यजुर्वेद [यज्ञ-विधियों का ज्ञान], सामवेद [स्तुति-मन्त्रों का ज्ञान] और अथर्ववेद [अथर्वण (ऋषि) का ज्ञान]।

ऋग्वेद १:५०, ऋचाएँ १, ४ और १०, [अनुवाद] रेमोंदो पैन्निकर, *The Vedic Experience: Mantramanjari* [लॉस एन्जलॅस् : यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस,१९७७] पृ.२९४-९५।

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।